शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
वर्ष: 3, अंक:4; जनवरी-जून, 2022
पृष्ठ संख्या : 22-33

'बाजार में रामधन': एक अंतर्पाठ

✍ **प्रियंका कलिता**

शोध-सार :

भारतीय समाज की संरचना में कृषक-जीवन और संस्कृति एक महत्वपूर्ण घटक है । किसान के बिना भारतीय समाज की मुकम्मल तस्वीर पेश नहीं की जा सकती । आज भी भारत की उनहत्तर फीसदी जनसंख्या गाँवों में निवास करती है । गांवों की अधिकांश जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय कृषि ही है । नब्बे के दशक के पश्चात् जब उदारीकरण की नीतियाँ लागू हुईं, तब किसानों के जीवन का संघर्ष और भी बढ़ गया । खेती घाटे का सौदा होने के कारण किसान आत्महत्या करने लगे । उसके साथ ही क्रमशः किसान खेती को छोड़ने भी लगे । इस लेख में कैलाश बनवासी की चर्चित कहानी 'बाजार में रामधन' के माध्यम से किसान-जीवन की सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं को समझने का प्रयास किया गया है । उसके साथ ही कहानी के पाठ को विस्तृत फ़लक पर देखने एवं किसान समस्या को समझने के लिए एक दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास भी किया गया है । कहानी के पाठ के अंतर्गत क्या-क्या संभावना विकसित हो सकती है, उसकी भी पड़ताल की गयी है ।

बीज शब्द : *किसान, भूमंडलीकरण, बाजारवाद, कहानी, पाठक, बैल, रामधन, मुन्ना*

प्रस्तावना :

कैलाश बनवासी द्वारा रचित कहानी 'बाजार में रामधन' पहली बार सन् 1996 ई. में 'वसुधा पत्रिका' के कहानी विशेषांक में प्रकाशित हुई थी । नब्बे के दशक से लेकर अब तक के वर्षों में जब दलित विमर्श और स्त्री विमर्श की धूम मची हुई थी, ऐसे वक्त में गाँव और खेती -किसानी के संदर्भ में लिखी गयी कुछ चुनिन्दा कहानियों में 'बाजार में रामधन' कहानी का महत्व बढ़ जाता है । अपनी सम्प्रेषणशीलता के कारण यह कहानी बहुत ही सहज तथा सरल ढंग में पाठकों से रू-ब-रू

होती है, इसलिए भूमंडलीकरण के बाद किसानों के जीवन में आये परिवर्तन को और उनकी त्रासदी को परत दर परत उभारती हुई यह कहानी सहृदय पाठक की आत्मा में धँस जाती है। भारतीय समाज में किसानी केवल अन्न उत्पादन का माध्यम भर नहीं है,बल्कि वह हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग रही है। ऐसे कितने ही त्यौहार और लोकगीत हैं जो कृषि से, उगाई जाने वाली फसलों से, गर्मियों के बाद खेती के लिए जो बारिश होती है, उससे संबंध रखते हैं। होली, अक्षय तृतीया, पोंगल, ओणम, बसंत पंचमी, लोहड़ी, बैसाखी, मकर संक्रांति इत्यादि का संबंध खेती और किसानी से ही रहा है। ठीक इसी प्रकार बैलों का संबंध भी प्रत्यक्ष रूप से कृषक से जुड़ा होता है। कृषक के लिए वह केवल जानवर नहीं होता है, बल्कि उसके घर का सदस्य होता है।

विश्लेषण :

कहानी की विषयवस्तु जितनी मार्मिक है, उसका शिल्प भी उतना ही बेजोड़ है। कहानी में हमें तीन दृश्य दिखाई देते हैं। वे तीनों दृश्य हमारी स्मृतियों में कौंध जाते हैं और हृदय पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ जाते हैं। कहानी के पहले दृश्य में बैल को बेचने के लिए रामधन और उसके छोटे भाई मुन्ना के बीच एक संवाद उभरता है। रामधन के लिए असहज स्थिति है। वह कभी सोच ही नहीं सकता था कि एक दिन मुन्ना बैलों को बेचने की बात कहेगा। यह बात जितना रामधन को बेचैन करती है, उतना ही पाठक को भी बेचैन करती है। यह लेखक के रचना-कौशल की सफलता है। प्रेमचंद के शब्दों में-

> एक ही घटना या स्थिति से सभी मनुष्य समान रूप से प्रभावित नहीं होते। हर आदमी की मनोवृत्ति और दृष्टिकोण अलग है। रचना -कौशल इसी में है कि लेखक जिस मनोवृत्ति या दृष्टिकोण से किसी बात को देखे पाठक भी उसमें उससे सहमत हो जाए यही उसकी सफलता है। इसके साथ ही हम साहित्यकार से यह भी आशा रखते हैं कि वह अपनी बहुज्ञता और अपने विचारों की विस्तृति से हमें जाग्रत करे, हमारी दृष्टि और मानसिक परिधि को विस्तृत करे। (आचार्य 2012:155)

कहानी का दूसरा दृश्य- उसके शीर्षक का केंद्रबिन्दु है। क्योंकि कहानी का शीर्षक 'बाजार में रामधन' है। इसी दूसरे दृश्य में रामधन अपने बैलों को बेचने के लिए बाजार में खड़ा रहता है। कहानी का तीसरा और अंतिम दृश्य वह है, जिसमें रामधन बाजार से अपने बैलों के साथ वापस घर लौट रहा है। इस अंतिम दृश्य में लेखक स्वयं पाठकों को कहानी में शामिल करके सीधे संबोधित करता है। पाठकों को भी कहानी का प्रत्यक्षदर्शी बना देता है। कहानी का अंतिम दृश्य अन्तर्मन को भिगो देता है। इस कहानी के परिप्रेक्ष्य में डॉ. नामवर सिंह ने लिखा है-

> 'बाजार में रामधन' नामक कहानी इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी के लेखक खासतौर से या तो गाँव के जीवन से जुड़े हुए हैं अथवा गाँव की स्मृतियों को भूल नहीं गए हैं, वे एक नष्ट होती हुई संस्कृति की कहानियाँ लिख रहें हैं। (यादव 2006:208)

कहानी को तीन बिन्दुओं के आधार पर देखा जा सकता है- आरंभ, मध्य और अंत। इन्हीं तीनों दृश्यों की कसौटी पर कहानी को कसकर देखने से कहानी की आंतरिक संरचना एवं उसके अंतर्पाठ का विश्लेषण हो सकता है। कहानी अपने लघु कलेवर में चलचित्र की तरह आगे बढ़ती है।

आरंभिक दृश्य बालोद तहसील के बुधवारी बाजार से होता है, जिसमें रामधन अपने एक जोड़ी बैल लेकर बेचने के लिए खड़ा है। कहानी का मूल बिन्दु यही एक जोड़ी बैल है। लेखक खुद कथावाचक की भूमिका में मौजूद हैं और अपने पाठकों को कहानी के बारे व्यक्त करते हुए कहते हैं-

> रामधन के बारे में कुछ मोटी-मोटी जानकारी दे देना मैं उचित समझता हूँ। उमर होगी उसकी लगभग बत्तीस साल की। संपत्ति के नाम पर दो एकड़ खेत है, दो बैल और एक टूटता-फूटता पुरखौती कच्चा मकान। परिवार में बुढ़िया माँ है, पत्नी, दो बच्चे और एक छोटा भाई है- मुन्ना। रामधन चौथी कक्षा तक ही पढ़ा हुआ है लेकिन मुन्ना को बारहवीं पास किये हुए दो साल गुजर चुके हैं। रामधन ने अपने छोटे भाई को कालेज नहीं पढ़ाया। कुछ तो इसलिए कि उनके सरीखे लोगों के पढ़ने-लिखने से कुछ

होता-हवाता नहीं है दूसरी और असल बात -वही घर की आर्थिक तंगी । (यादव 2006:68)

लेखक की इन पंक्तियों के माध्यम से सम्पूर्ण कहानी की कथावस्तु और एक कृषक परिवार के घर की स्थितिबोध का ज्ञान हो जाता है । सामान्यतः भारतीय किसान की यही छवि सबके मन में उभरती है । वह भला किसान ही क्या जो कर्ज में न हो या आर्थिक तंगी में न हो । यही आर्थिक तंगी छोटे भाई मुन्ना को आगे की पढ़ाई से महरूम कर देती है । दूसरी तरफ आर्थिक तंगी के ही कारण मुन्ना खेती के आधार दो बैलों को बेचकर ही छोटा-मोटा धंधा करना चाहता है । मुन्ना आज की पीढ़ी का प्रतीक है; जो खेती -किसानी और अपनी जड़ों से कटा हुआ एक ऐसा युवा बेरोजगार है, जो दो सालों से नौकरी करने के या खोजने के नाम पर इधर-उधर घूम रहा है । परंतु अब वह इनसे भी ऊब चुका है ।

मुन्ना की नजर दो बैलों पर है । वह इन्हें बेचकर कोई धंधा करना चाहता है । उसके लिए वे सिर्फ दो बैल हैं । उसे लगता है कि वे अनावश्यक हैं,जिसके बिना भी खेती की जा सकती है । यहीं पर दोनों भाई रामधन और मुन्ना के दो अलग-अलग विकसित नजरिए को देखा जा सकता है । दोनों के बीच संवाद की मार्मिकता से कहानी के मूल कथानक को समझा जा सकता है-

"भैया बैल को बेच दो"

"ये क्या कह रहा है तू ?"

"ठीक ही तो कह रहा हूँ मैं ! बेच दो इनको । मैं धंधा करूंगा !"

"अगर कुछ बनना है, कुछ करना है तो पहले उतना कमाओ ! इसके लिए घर की चीज क्यों खराब करता है ? पहले कमा, इसके बाद बात करना ! हम तेरे लिए घर की चीज नहीं बेचेंगे । समझे ?"(यादव 2006 : 68)

मुन्ना ऐसी शिक्षा से शिक्षित है,जो अपनी जड़ों से कटकर संवेदना से शून्य एक निर्मम पीढ़ी का विकास कर रही है, जिसके लिए पैसा ही सबकुछ है । पारिवारिक संबंध, खेती और बैल सब उसके लिए अनावश्यक हैं । एक किसान के लिए बैल ही उसकी खेती का आधार होता है । बारहवीं पास मुन्ना इस सच्चाई से अनजान कैसे हो सकता है ? उसकी अर्जित शिक्षा क्या इतना भी व्यवहार बुद्धि नहीं दे सकती है । मुन्ना की सोच भूमंडलीकरण के बाद आये सामाजिक-आर्थिक बदलाव की तरफ रेखांकित करती है । जहाँ पैसे के आगे सभी चीजें गौण हो जाती हैं । उसी खेती और बैल से मेहनत -मजूरी करके रामधन और उसकी पत्नी ने अपना जीवन व्यतीत किया है । उसी के बल पर मुन्ना को बारहवीं तक पढ़ाया भी है। लेकिन मुन्ना के ऊपर कोई धंधा करने का नशा इस कदर चढ़ जाता है कि घर के एक जोड़ी बैल उसके आँख की किरकिरी बन जाते हैं । मुन्ना बैलों को अनावश्यक मानते हुए अपना तर्क निम्नलिखित रूप में रखता है-

> आखिर ये दिन भर यहाँ बेकार में बंधे ही तो रहते हैं । खेती-किसानी के दिन छोड़कर कब काम आते हैं ? यहाँ खा-खाकर मुटा रहे हैं ये ! (यादव 2006:68)

रामधन चौथी कक्षा तक ही पढ़ा है,लेकिन उसे पारिवारिक रिश्तों की समझ, सामाजिक मर्यादा का ज्ञान उसके किसानी व्यक्तित्व का परिचय देते हैं । एक कृषक सदैव यह चाहता है कि उसके परिवार में एकजुटता बनी रहें तथा किसी तरह का कलह उत्पन्न न हों । प्रेमचंद के कथा साहित्य में भी इस तरह के दृष्टांत प्रायः दृष्टिगोचर होते हैं,जिनमें पारिवारिक और सामाजिक मर्यादा सबसे बड़ी चीज होती है । यह भी क्या विडम्बना है कि 'गोदान' के होरी की इच्छा गाय थी किन्तु उसका अपना ही भाई हीरा गाय को जहर देकर उसकी उम्मीद को मार देता है । रामधन का प्रेम भी अपने बैल से है लेकिन उसका अपना ही भाई मुन्ना बैलों का दुश्मन बना हुआ है । किसान की सबसे बड़ी समस्या यही रही है कि उसे जितनी बाह्य परिस्थिति से लड़ना पड़ता है, उतना ही स्वयं परिवार से संघर्ष करना पड़ता है । दोनों कृषक समांतर स्थितियों के आधार पर लड़ने के फलस्वरूप मानसिक रूप से टूट जाते हैं । 'गोदान' में प्रेमचंद ने युवा पीढ़ी द्वारा अपनी कृषि से

मोहभंग की स्थिति को गोबर के माध्यम से रेखांकित किया है। यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि गोबर भी कुछ पढ़-लिख पाता तो मुन्ना की भाँति वह भी काम-धंधे के नाम पर होरी से ऐसी ही जिद करता जो होरी जैसे सामान्य किसान के लिए संभव नहीं होता।

रामधन की मानसिक दशा एवं परिस्थितियों को देखकर होरी की छवि बरबस सामने आ जाती है। प्रस्तुत 'बाजार में रामधन' कहानी गोदान उपन्यास की अगली कड़ी के रूप में प्रतीत होती है। औपनिवेशिक भारत में जहाँ लगान के अभाव में होरी को अपने खेत से दूर होना पड़ता है, वहीं स्वतंत्र भारत में रामधन को अपने बैल से अलग होना पड़ता है। किसान की आर्थिक स्थिति का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि भारतीय किसान की अवस्था परिस्थितियों के सम्मुख कितनी विवश रही है।

एक भाई के लिए बैल बेकार में बंधे दिखाई पड़ते हैं। रामधन के मानसिक द्वंद को कहानीकार ने अधोलिखित रूप में उल्लेख किया है-

> रामधन मुन्ना को समझा नहीं पा रहा था। वह समझ भी नहीं सकता था। अब कैसे समझाता इस बात को कि बैल हमारे घर की इज्जत है..... घर की शोभा है। और इससे बढ़कर हमारे पिता की धरोहर है। उस किसान का भी कोई मान है समाज में, जिसके घर एक जोड़ी बैल नहीं हैं ! कैसे समझाता कि हमारे साथ रहते-रहते ये भी घर के सदस्य हो गए हैं। जो भी रूखा-सूखा,पेज-पसिया मिलता है, उसी में खुश रहते हैं। वह मुन्ना से कहना चाहता था, तुमको इनका बेकार बंधा रहना दिखता है मगर इनकी सेवा नहीं दिखती ? इनकी दया-मया नहीं दिखती ?(यादव 2006:69)

कैलाश बनवासी की लिखी इन पंक्तियों में किसी को भी कहीं न कहीं प्रेमचंद की गूंज सुनाई दे सकती है। रामधन का अपने छोटे भाई मुन्ना से इस बात के लिए उलझना अच्छा नहीं लगता है। वह बड़ा भाई होने के कारण इसकी मर्यादा को समझता है। लेकिन मुन्ना के लिए यह सब मायने नहीं रखता।

> रामधन को एक गहरा धक्का लगा था, अब यह भी मुंह उठाकर बोलना सीख गया है। लेकिन इससे भी ज्यादा दुःख इस बात का हुआ कि मुन्ना उसे बेचने को कह रहा है जो उनकी खेती का आधार है। (यादव 2006:68)

दोनों भाइयों के मध्य इस विषय पर प्रतिदिन कुछ न कुछ बातचीत हो रही थी। बातों का तीखापन बढ़ता जा रहा था। यह भी जीवनानुभव की बात है कि अपने लोगों की बातें आत्मा पर चोट करती हैं। वह आंतरिक घाव बाह्य घाव से अधिक कष्ट पहुँचाता है। मुन्ना के व्यवहार ने किस प्रकार रामधन के हृदय पर मार्मिक प्रहार किया, इसको कथाकार ने निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया है-

> बातचीत हर बार अपनी पिछली सीमा लांघ रही थी। कहने को तो मुन्ना यहाँ तक कह दिया था कि इन बैलों पर सिर्फ तुम्हारा ही नहीं मेरा भी हक है। इस बात ने लाजवाब कर दिया था रामधन को। और अवाक ! कभी नहीं सोचा था उसने कि मुन्ना उसके जैसे सीधे-साधे आदमी से हक की बात करेगा। मुन्ना को क्या लगता है, मैं उसका हिस्सा हड़पने के लिए बैठा हूँ ? रामधन खूब रोया था इस बात पर... अकेले में। (यादव 2006:68-69)

अब कहानी का दूसरा दृश्य आरंभ होता है तथा कहानी के मर्म का विस्तार होता है। लेखक ने एकदम सधी हुई भाषा में पशु मेले के वातावरण का निर्माण किया। एक ऐसा पशु मेला, जहाँ भिन्न-भिन्न कद-काठी के बैल एक साथ बिकने के लिए लाये गये हैं। इसी मेले में रामधन भी अपने बैलों को बेचने के लिए आया हुआ है। उसकी मनोस्थिति का अनुमान लगा पाना संभव नहीं है। एक अच्छी कहानी की विशेषता यह भी है कि वह पाठक के अंदर, अंत तक कौतूहल बनाए रखे, उसे कहानी के साथ बांधे रहे। लेखक की यह सार्थकता है कि रामधन जैसे साधारण कृषक को उसकी वेश-भूषा के साथ जीवंत कर दिया है। इसलिए कहानी पढ़ते समय पाठक का साधारणीकरण रामधन के साथ हो जाता है। उससे एक तादात्म्य स्थापित कर लेता है, रामधन के

चरित्र का विस्तार हमारे आसपास के किसान के साथ हो जाता है,कहानी का मानवीय पहलू संवेदनात्मक रूप से जुड़ जाता है । ग्राम्यांचलों से सम्बद्ध पाठकों के लिए प्रस्तुत कहानी सहजतापूर्वक ग्राह्य हो जाती है; क्योंकि कथानक और पात्र उसके परिवेश का हिस्सा प्रतीत होते हैं।

वर्तमान विश्व एक बाजार बन चुका है । यह बाजारवाद के अतिक्रमण का दौर है । न चाहते हुए भी हम बाजार से अछूते नहीं रह पाते हैं । बाजार हमारी आवश्यकता को पूरा ही नहीं करता है, बल्कि जरूरत को पैदा भी करता है । वह अपने तमाम तरह के प्रलोभनों के हथकंडे अपनाकर ग्राहक पर शिकंजा कसता है । ग्राहक आगे-आगे भागता है और बाजार उसका पीछा करता है । बाजार पहले भी था और अब भी है । लेकिन दोनों में यही बुनियादी अंतर है । बाजार में रामधन अपना सौदा बेचने के लिए जरूर खड़ा है, लेकिन पैसे का प्रलोभन उसके किसानी स्वाभिमान और संवेदना को नहीं खरीद पाता है । एक से बढ़कर एक बाजार के माहिर खरीददार, दलाल और बिचौलिया बैलों का सौदा करने का प्रयास करते हैं । अपने शब्दों के जाल में उलझाते हैं, गाँव-घर और आत्मीयता का हवाला देते हैं। लेकिन रामधन उनके प्रभाव में नहीं आता । भूलऊ महाराज, सहदेव, भूनेश्वर दाऊ, चइता जैसे बैलों के खरीदार एवं दलाल जिन्हें अपने ऊपर यह अहंकार होता है कि कोई भी सौदा हो उसे पटाने का कौशल उन्हें प्राप्त है। लेकिन रामधन के दृढ़निश्चय के सामने उनके तर्क विफल हुए ।

लेखक को पात्रों की संवाद शैली में अचूक सफलता मिली है । किसानी-जीवन के शब्दों को इस प्रकार से सँजोया गया है कि पशु मेले का ग्रामीण परिवेश सजीव हो जाता है । कथ्य के अनुरूप सजग भाषा के प्रयोग से कहानी अपनी वास्तविकता में ढल गयी है । कहानी के दूसरे दृश्य में लेखक अपनी तरफ से बहुत कम कहता है अधिकांश पात्रों के बीच संवाद ही चलता है । कैलाश बनवासी ने संवाद के स्तर पर कहानी को उसके चरम बिन्दु पर पहुँचा दिया है । यह संवाद मनुष्य-मनुष्य के मध्य ही नहीं, बल्कि मूक जानवर के अंदर की करुणा एवं दया भाव को भी उन्होंने सरलता के साथ प्रकट कर दिया है ।

रामधन एक सीधा-सादा किसान अवश्य है, परंतु मूर्ख नहीं है। वह मेले के चाल-ढाल से परिचित है कि यहाँ भिन्न- भिन्न मानसिकता के लोग अपनी धूर्तता को छिपाते हुए सादगी की खाल ओढ़कर आते हैं। वे तरह-तरह की बातें बनाकर अपने अंतिम समय तक सौदा तय करने का प्रयास करते हैं; साम, दाम, दंड, भेद सभी तरह के हथकंडे अपनाते हैं। रामधन अपने बैलों का दाम चार हजार मांग रहा है लेकिन ग्राहक तीन हजार पाँच सौ तक दाम लगाते हैं। ग्राहक बहुत हुज्जत करते हैं, आग बबूला होते हैं। लेकिन रामधन शांति से काम लेता है। उसका धैर्य देखते बनता है। भुलऊ महाराज मीठी -मीठी बातों से रामधन को प्रभावित करके बैल खरीदना चाहते हैं, किन्तु जब पता चलता है कि रामधन चार हजार से एक पैसा भी कम करने के लिए तैयार नहीं है, तब उनका गुस्सा सातवें आसमान पर चला जाता है। दोनों के बीच वार्तालाप की कुछ बानगी देखते बनती है-

"अच्छा रामधन, जरा इनको रेंगाकर दिखाओ। चाल देख लूँ"....

"अच्छा, अब जरा इनका मुंह खोलकर दिखाओ। मैं इनके दांत गिनूँगा।"

महाराज ने अपने को खाँस-खंखारकर व्यवस्थित किया, फिर पूछा, "तो बताना भाई, कितने में दोगे ?"

रामधन विनम्र हो गया, "मैं तो पहले ही बता चुका हूँ मालिक..."

नाराजगी से भुलऊ महाराज का चन्दन और रोली का तिलक लगा माथा सिकुड़ गया, "फिर वही बात ! वाजिब दाम लगाओ,रामधन।"...

"क्या यार रामधन ! जान-पहचान के आदमी से तो कुछ कम करो। आखिर एक गाँव-घर होने का कोई मतलब है कि नहीं ? आंय !" .....

"नहीं पड़ेगा महराज, मेरी बात मानों। अगर पड़ता तो मैं दे नहीं देता।".....

> "तो साले एक तुम्हीं हो दुनियाँ में बैल बेचने वाले ? बाकी ये सब तो मुंह देखने वाले हैं! इतना गुमान ठीक नहीं रामधन !" (यादव 2006:69-70)

कहानी एक ऐसी विधा है,जहाँ बहुत कम शब्दों में अपने भावों की अभिव्यक्ति करनी पड़ती है। शब्दों को तराशकर दीवार में ईंट की तरह चुनाई करना पड़ता है। शब्दों को विन्यस्त करके ही एक अच्छे भाव का सम्प्रेषण किया जा सकता है। इस अर्थ में कैलाश बनवासी ने इस कहानी में कथ्य के अनुरूप ही शिल्प का चुनाव किया है। कहानी इसीलिए पाठक की अनुभूति का हिस्सा बन जाती है। इस संदर्भ में कमलेश्वर का कथन दृष्टव्य है-

> अब हर चीज कथ्य के बिन्दु से निश्चित होती है- कथ्य ही भाषा,शिल्प,शैली का निर्णायक है और लेखक कथ्य की प्रामाणिकता का रक्षक है। (कमलेश्वर 2015:134)

इसी दृश्य के अंत में लेखक ने पाठकों को संकेत दे दिया है कि रामधन लगातार तीसरे दिन बाजार में बैल को लेकर आया है। वह बिना बेचे ही हाट से अपने बैलों के साथ वापस लौट रहा है। यह परवाह किए बिना कि गाँव वाले हँसेंगे, घर में पत्नी अलग चिड़चिड़ायेगी और मुन्ना फिर गुस्सायेगा।

कहानी का तीसरे और अंतिम दृश्य को लेखक ने बहुत संक्षेप में लिखा है। लेकिन यह अंतिम दृश्य ही पाठक की आत्मा को निचोड़ देता है, मन को पूरी तरह भिगो देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि रामधन की बीड़ी का आखिरी कश ही नहीं बुझता है, बल्कि पूरे किसान के जीवन की आशा एवं उम्मीद भी बीड़ी के आखिरी कश की तरह बुझ जाती है। कहानी का अंत पाठक को ज़ोर का धक्का देकर निस्तब्ध कर देता है, मन की भीतरी परत तक एक सन्नाटा छा जाता है। लेखक खुद महाभारत के संजय की तरह पाठक को दृश्य देखने और सुनने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं। कहानी का अंतिम दृश्य अपने चरमबिन्दु पर पहुँच गया है, जो इस प्रकार है-

> 'रामधन बैलों की रस्सी थामे, बीड़ी पीते हुए चुपचाप लौट रहा है। पैदल। सांझ खूब गहरा चुकी है और अंधेरा चारों ओर घिर आया है। वह किसी गाँव के धूल अटे कच्चे रास्ते से गुजर रहा है। जब आप ध्यान से देखेंगे तो पाएंगे, वे दो बैल और रामधन नहीं, बल्कि आपस के तीन गहरे साथी जा रहे हैं। हाँ, तीन गहरे साथी। ...आप ध्यान से सुनिए वे आपस में बातें कर रहे हैं...
>
> उसके बैल पूछ रहे हैं, "मान लो अगर दाऊ या महराज तुम्हें चार हजार दे रहे होते तो क्या तुम हमें बेच दिए होते ?"
>
> रामधन ने जवाब दिया, "शायद नहीं। फिर भी नहीं बेचता उनके हाथ तुमको।"
>
> "बेचना तो पड़ेगा एक दिन !" बैल कह रहे हैं, "आखिर तुम हमें कब तक बचाओगे, रामधन ? कब तक ?"
>
> जवाब में रामधन मुस्करा दिया- एक बहुत फीकी और उदास मुस्कान ... अनिश्चितता से भरी हुई। रामधन अपने बैलों से कह रहा है, "देखो ... हो सकता है अगली हाट में मुन्ना तुम्हें लेकर आए।"
>
> बीड़ी का यह आखिरी कश था और वह बुझने लगी। (यादव 2006:71)

'बाजार में रामधन' कहानी भूमंडलीकरण के परिणामस्वरूप नष्ट होती भारतीय ग्राम ग्राम्य संस्कृति की करुण कहानी है। इस संबंध में आलोचक डॉ. नामवर सिंह ने इस कहानी के परिप्रेक्ष्य में उचित ही टिप्पणी की है-

> अपनी साहित्यिक विरासत के आधार पर आज यही कहने को जी चाहता है कि भूमंडलीकरण के आक्रामक दौर में नष्ट होती हुई ग्राम संस्कृति और आत्महत्या के लिए विवश किसानों को केंद्र में रखकर किया जाने वाला कथा सृजन ही अपनी सार्थकता प्रमाणित कर सकता है। (यादव 2006:208)

निष्कर्ष :

बाजारवाद ने किसानों से केवल उसके अंतरंग साथी बैल को ही नहीं छीना है, बल्कि उनकी आत्मनिर्भरता एवं स्वाभिमान को भी छीना है । आज किसान गहरे संकट से गुजर रहा है । बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ खाद, बीज, कीटनाशक दवा का कारोबार करके अरबपति बन रही हैं, किन्तु किसान अपनी दुर्दशा से तंग आकर आत्महत्या कर रहे हैं। खेती की लागत इतनी बढ़ गयी है और आमदनी घट गयी है । अब रामधन जैसे छोटे काश्तकर खेती के बल पर अपनी जीविका नहीं चला सकते हैं । खेती की इसी दशा के कारण मुन्ना जैसे लोगों का मोहभंग हो गया है, किन्तु वे भी विकल्पहीन हैं । मुन्ना रोजगार के नाम पर घर की पूंजी बैल को ही बेचने पर अड़ा हुआ है । मुन्ना जैसे लोग सिर्फ बैल ही नहीं बेचते हैं, हो सकता है कि व्यवसाय में असफल होने पर भविष्य में खेत बेचकर धंधा करने की जिद वह अपने भाई रामधन से करे । कैलाश बनवासी की यह कहानी किसान-जीवन की त्रासदी को एक रूपक कथा के रूप में प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करती है ।

ग्रंथ-सूची :

आचार्य, नंदकिशोर.सम्पा. प्रेमचंद का चिंतन.बीकानेर:वाग्देवी प्रकाशन, 2018.

कमलेश्वर, नई कहानी की भूमिका.पहला.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन, 2015.

कैलाश, बनवासी.“बाजार में रामधन.” हंस 239 (2006):68-71.

प्रेमचंद.गोदान.वाराणसी:अनुराग प्रकाशन, 2014.

सिंह, नामवर. “विमर्शों के शोर में दबते किसानों के सवाल.” हंस 239 (2006): 207-209.

संपर्क-सूत्र:
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय
ई-मेइल- priyanka2016kalita@gamil.com